The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

45

भागवत-महापुराण में सामाजिक मूल्य

Shivam K. Dave
Research Scholar
Sanskrit Bhavan, Saurashtra University Rajkot, Gujarat

शोधपत्र सारांश :

भागवत-महापुराण सामाजिक समता के मूल्य का भी समर्थक है। पुराणों में वर्णों का उल्लेख अवश्य मिलता है, परंतु भागवत उनका आधार गुण और कर्म को मानता है, न कि जन्म को। इस विचार में समाज सुधार और उदारता का स्पष्ट संकेत है। मनुष्य के व्यक्तित्व और समाज में उसकी प्रतिष्ठा को उसके कार्य और चरित्र के आधार पर आँकना चाहिए। इस दृष्टि से भागवत आधुनिक समाज-साहित्य के समान विचार प्रस्तुत करता है, जिसमें समान अवसर और न्याय की भावना है। स्त्री के प्रति उच्च सम्मान भी भागवत का अनिवार्य मूल्य है। यह ग्रंथ स्त्री को केवल परिवार की आधारशिला मानकर नहीं चलता, बल्कि उसकी गरिमा, बुद्धिमत्ता, त्याग, और नैतिक शक्ति को भी उच्च स्थान देता है। देवहूति और कर्दम की कथा पति-पत्नी के परस्पर स्नेह, सहयोग और सम्मान का आदर्श प्रस्तुत करती है। द्रौपदी की पीड़ा और उसके द्वारा क्षमा एवं धर्म की रक्षा का संकल्प समाज को यह सिखाता है कि स्त्री केवल गृहस्थी की धुरी नहीं, बल्कि धर्म-रक्षा की प्रेरक शक्ति भी है। यशोदा का मातृत्व, रूक्मिणी का सम्मान, कुंती की बुद्धिमत्ता- ये सभी संदेश देते हैं कि स्त्री सामाजिक मूल्यों की निर्माता है। भागवत गुरु-शिष्य संबंध का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्वरूप प्रस्तुत करता है। शुकदेव और राजा परीक्षित का सात दिनों का संवाद केवल आध्यात्मिक ज्ञान का आदान–प्रदान नहीं, बल्कि शिक्षाशास्त्र का आदर्श प्रमाण है। भागवत-महापुराण आदर्श शासन व्यवस्था का भी प्रमाण प्रस्तुत करता है। पृथु, अम्बरीश, परीक्षित- इन राजाओं के चरित्र यह बताते हैं कि सत्ता का उद्देश्य व्यक्तिगत सुख-साधन नहीं, बल्कि समाज की सेवा है। राजा को प्रजा के हित के लिए त्याग, धैर्य और करुणा का पालन करना चाहिए। उसके लिए सत्य, न्याय और दान प्रमुख तत्त्व हैं। यदि सत्ता शक्ति का दुरुपयोग होती है, तो समाज में अराजकता फैलती है, परंतु जब राजा धर्म का आधार बनता है, तब प्रजा सुखी और शांत होती है।भागवत में कला और संस्कृति का जिस प्रकार से अद्भुत वर्णन मिलता है, वह भी सामाजिक मूल्य का ही विस्तार है। कृष्ण का संगीत, नृत्य, रास- ये सभी मनुष्य के भावलोक को विस्तृत करते हैं। समाज केवल नियम और अनुशासन से नहीं चलता, उसे संगीत, उत्सव, नृत्य, कला, साहित्य और सौंदर्य की भी आवश्यकता होती है। वृंदावन की संस्कृति सामूहिक उत्सवों, त्योहारों और सामूहिक सहयोग की संस्कृति को व्यक्त करती है। यह बताती है कि समाज में हँसी, मिलन, सौहार्द और उत्सव भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितना कि श्रम और दायित्व । भागवत-महापुराण में कतिपय सामाजिक मूल्यों का दिग्दर्शन कराया गया है ।

बीज शब्द : संस्कृति, अनुष्ठानों, नैतिकता, दर्शन, सत्यनिष्ठा, कल्पतरु, अम्बरीश, देवहूति, आत्मानुशासन, शाश्वत

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति में पुराणों की परंपरा केवल धार्मिक अनुष्ठानों की मार्गदर्शिका नहीं रही, बल्कि वह समाज की संरचना, व्यक्ति के चरित्र-निर्माण, नीति-विचार, कला, साहित्य, अर्थ-व्यवस्था और राजनैतिक आदर्शों का मूल आधार भी बनी। उस विशाल पुराण-साहित्य में भागवत-महापुराण अद्वितीय है। यह केवल एक कथा-ग्रंथ नहीं, बल्कि

मानवीय मूल्यों और सामाजिक आदर्शों की शिक्षाओं का महाग्रंथ है। इससे उत्पन्न भक्ति-भाव ने समाज को सौम्यता, परस्पर सहयोग, सहिष्णुता और नैतिकता की दिशा में प्रेरित किया है। भागवत का प्रभाव केवल धार्मिक जीवन तक सीमित नहीं, बल्कि समाज विज्ञान, प्रशासन, परिवार संस्था, स्त्री-पुरुष संबंध, प्रकृति संरक्षण, न्याय-व्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

भागवत-महापुराण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें समाज को सुधारने की दृष्टि से चरित्रों के माध्यम से उदाहरण दिए गए हैं। यहाँ कोई कठोर उपदेशात्मक शैली नहीं, बल्कि कथा, दर्शन, संवाद, प्रेम, भक्ति और जीवन-संघर्ष के माध्यम से सामाजिक मूल्य स्थापित किए गए हैं। इसका मूल संदेश यही है कि मनुष्य पहले उत्तम मनुष्य बने, फिर धार्मिक होना स्वाभाविक परिणाम बन जाएगा। मनुष्य की कोमलता, करुणा, स्नेह, त्याग और सत्यनिष्ठा- ये सभी गुण समाज को सुगंधित करते हैं, और इन्हीं का विस्तार भागवत में पाया जाता है। श्रीमद्भागवत के रचनाकाल के सम्बन्ध में विद्वानों के मत-मतान्तर हैं। पूर्व में कुछ आचार्यों द्वारा भागवत के काल को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। श्रीमद्भागवत में पुराण के दस लक्षणों का विशद् निरूपण मिलता है, जिससे उसकी तिथि का अनुमान किया जा सकता है। इस पुराण के उद्धरण मिताक्षर, अपरार्क, स्मृतिचन्द्रिका तथा कल्पतरु आदि प्राथमिक निबन्ध ग्रंथों में नहीं मिलते। अतः इसे पश्चात् कालीन पुराण माना गया है तथा उसकी तिथि पांचवी शती से लेकर एक हजार ईसा तक प्रतिपादित किया जा सकता है।[1] 'मूल्य' व्यक्ति का जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण है जो समाज के साथ मिलकर विकसित होता है। 'मूल्य' एक ऐसी धारणा है जो मूलतः व्यक्ति के जीवन में पनपती है, परन्तु जिसका विकाश समाज की और होता है। जो समाज में आचरण-व्यवहार सम्बन्धी मान्यताओं, विश्वासों और अभिलाषाओं को तोलती है, उनका मापदंड कराती है।[2]

भागवत का प्रारम्भ ही इस घोषणा से होता है कि सत्य ही परम तत्त्व है- 'सत्यं परं धीमहि।'[3] यह सत्य केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का आवश्यक नियम है। जहाँ समाज की नींव सत्य पर टिकती है, वहाँ भय, द्वेष और अविश्वास के लिए स्थान नहीं होता। भागवत में राजा परीक्षित की कथा इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। उनके द्वारा शासन में सत्य, न्याय और प्रजा-हित की प्रतिष्ठा समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। सत्य के माध्यम से प्रशासन स्थायित्व प्राप्त करता है और प्रजा के हृदय में विश्वास कायम रहता है। भागवत-महापुराण सामाजिक जीवन का दूसरा बड़ा मूल्य करुणा को मानता है। करुणा मनुष्यता का हृदय है। प्रह्लाद, ध्रुव, अम्बरीष, देवहूति, विदूर- ये सभी पात्र करुणा के उच्च मूल्यों को सामने रखते हैं। विशेष रूप से प्रह्लाद की कथा समाज को सिखाती है कि कठोरतम परिस्थितियों में भी अहिंसा, सहिष्णुता और करुणा नहीं छोड़नी चाहिए।[4] कृष्ण की गोवर्धन-लीला प्रकृति और जीव-जंतुओं के प्रति करुणा का संदेश देती है। गोवर्धन पर्वत की आराधना यह सीख देती है कि प्रकृति केवल अर्जन और उपभोग का साधन नहीं, बल्कि जीवन-दाता और संरक्षक है। समाज का नैतिक कर्तव्य है कि वह प्रकृति की रक्षा करे और नदियों, पर्वतों, वृक्षों और पशुओं का सम्मान करे।[5] भागवत-महापुराण सामाजिक समता के मूल्य का भी समर्थक है। पुराणों में वर्णों का उल्लेख अवश्य मिलता है, परंतु भागवत उनका आधार गुण और कर्म को मानता है, न कि जन्म को। इस विचार में समाज सुधार और उदारता का स्पष्ट संकेत है। मनुष्य के व्यक्तित्व और समाज में उसकी प्रतिष्ठा को उसके कार्य और चरित्र के आधार पर आँकना चाहिए। इस दृष्टि से भागवत आधुनिक समाज-साहित्य के समान विचार प्रस्तुत करता है, जिसमें समान अवसर और न्याय की भावना है।

स्त्री के प्रति उच्च सम्मान भी भागवत का अनिवार्य मूल्य है। यह ग्रंथ स्त्री को केवल परिवार की आधारशिला मानकर नहीं चलता, बल्कि उसकी गरिमा, बुद्धिमत्ता, त्याग, और नैतिक शक्ति को भी उच्च स्थान देता है। देवहूति और कर्दम की कथा पति-पत्नी के परस्पर स्नेह, सहयोग और सम्मान का आदर्श प्रस्तुत करती है।[6] द्रौपदी की पीड़ा और उसके द्वारा क्षमा एवं धर्म की रक्षा का संकल्प समाज को यह सिखाता है कि स्त्री केवल गृहस्थी की धुरी नहीं, बल्कि

धर्म-रक्षा की प्रेरक शक्ति भी है।[7] यशोदा का मातृत्व, रूक्मिणी का सम्मान, कुंती की बुद्धिमत्ता- ये सभी संदेश देते हैं कि स्त्री सामाजिक मूल्यों की निर्माता है। भागवत गुरु-शिष्य संबंध का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्वरूप प्रस्तुत करता है। शुकदेव और राजा परीक्षित का सात दिनों का संवाद केवल आध्यात्मिक ज्ञान का आदान–प्रदान नहीं, बल्कि शिक्षाशास्त्र का आदर्श प्रमाण है। यहाँ ज्ञान का संचार आग्रह, भय या दमन से नहीं, बल्कि प्रेम, संवाद और तर्क से होता है। समाज में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर विवेक, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है।

भागवत-महापुराण आदर्श शासन व्यवस्था का भी प्रमाण प्रस्तुत करता है। पृथु, अम्बरीष, परीक्षित- इन राजाओं के चरित्र यह बताते हैं कि सत्ता का उद्देश्य व्यक्तिगत सुख-साधन नहीं, बल्कि समाज की सेवा है। राजा को प्रजा के हित के लिए त्याग, धैर्य और करुणा का पालन करना चाहिए। उसके लिए सत्य, न्याय और दान प्रमुख तत्त्व हैं। यदि सत्ता शक्ति का दुरुपयोग होती है, तो समाज में अराजकता फैलती है, परंतु जब राजा धर्म का आधार बनता है, तब प्रजा सुखी और शांत होती है।[8] भागवत में कला और संस्कृति का जिस प्रकार से अद्भुत वर्णन मिलता है, वह भी सामाजिक मूल्य का ही विस्तार है। कृष्ण का संगीत, नृत्य, रास- ये सभी मनुष्य के भावलोक को विस्तृत करते हैं। समाज केवल नियम और अनुशासन से नहीं चलता, उसे संगीत, उत्सव, नृत्य, कला, साहित्य और सौंदर्य की भी आवश्यकता होती है। वृंदावन की संस्कृति सामूहिक उत्सवों, त्योहारों और सामूहिक सहयोग की संस्कृति को व्यक्त करती है। यह बताती है कि समाज में हँसी, मिलन, सौहार्द और उत्सव भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितना कि श्रम और दायित्व। परिवार और सामाजिक सहयोग का मूल्य भी भागवत में अत्यंत विस्तृत रूप से वर्णित है। गोकुल–वृंदावन की सामुदायिक संरचना आधुनिक ग्राम-समाज के लिए एक प्रेरणा-स्थल है। यहाँ वृद्ध, बालक, स्त्रियाँ, पशु- सभी एक-दूसरे के संरक्षक की भूमिका निभाते हैं। श्रम-विभाजन, सामूहिक कार्य, आपसी सहायता, उत्सवों का सामूहिक आयोजन, संकट के समय सहयोग- ये सब समाज को सुदृढ़ बनाते हैं। भागवत-महापुराण त्याग, तप और आत्मानुशासन की महत्ता भी प्रकर्ष से प्रतिपादित करता है। ध्रुव का तप समाज को यह सिखाता है कि धैर्य और दृढ़ संकल्प से असंभव भी संभव हो सकता है। अम्बरीष का उपवास और संयम की कथा बताती है कि व्यक्ति जब अपने मन और इंद्रियों पर अधिकार कर लेता है, तब उसका जीवन समाज के लिए कल्याणकारी बन जाता है।

भागवत का सर्वश्रेष्ठ संदेश भक्ति है, परंतु यह भक्ति मात्र धार्मिक कर्मकांड नहीं। यह सामाजिक भक्ति है- जिसमें प्रेम, सहिष्णुता, दया और उदारता अनिवार्य तत्त्व हैं। जब व्यक्ति में अहंकार नहीं रहता और वह ईश्वर से प्रेम करता है, तब वह समाज के लिए विनम्र, शांत और सहयोगी बन जाता है। भागवत की भक्ति हिंसा, क्रोध और ईर्ष्या को समाप्त करती है, मनुष्य के भीतर दया, प्रेम और सदाचार को जन्म देती है। कृष्ण के शत्रुओं के दमन से भी समाज को महत्वपूर्ण संदेश मिलता है कि बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली हो, सत्य और धर्म के सामने टिक नहीं सकती। कंस, शिशुपाल, नरकासुर, कालिय- ये सभी प्रतीक हैं समाज में व्याप्त अत्याचारों, अन्यायों और दुराचारों के। कृष्ण इन दुष्ट प्रवृत्तियों का नाश करके यह दिखाते हैं कि समाज में जब कोई बल अत्याचार करे, तो उसके विरुद्ध खड़े होना भी धर्म है।

*** भागवत महापुराण में कतिपय सामाजिक मूल्य :**

(1) सत्य और न्याय पर आधारित सामाजिक व्यवस्था :

भागवत समाज की नींव सत्य, ईमानदारी और न्याय पर रखने को कहता है। राजा परीक्षित और पृथु के चरित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जब शासन सत्यनिष्ठ होता है, तब समाज स्थिर, सुरक्षित और समृद्ध बनता है।

(2) करुणा, अहिंसा और मनुष्यता का विस्तार :

प्रह्लाद, ध्रुव, गोवर्धन-लीला और कृष्ण के व्यवहार से करुणा को सर्वोच्च सामाजिक मूल्य माना गया है। मनुष्य, प्रकृति और पशु—सभी के प्रति दया रखने का संदेश भागवत का वैश्विक मानवीय मूल्य है।

(3) कर्म-आधारित समता और सामाजिक न्याय :

भागवत जन्म-आधारित भेद को अस्वीकार कर गुण और कर्म को प्रधानता देता है। यह आधुनिक समानता, सामाजिक न्याय और समान अवसर की अवधारणा का प्राचीन आधार प्रस्तुत करता है।

(4) स्त्री की गरिमा, सम्मान और सामाजिक भूमिका :

देवहूति, द्रौपदी, कुंती, रुक्मिणी और यशोदा जैसे पात्र स्त्री की बुद्धि, शक्ति, त्याग और सामाजिक योगदान को उच्च स्थान देते हैं। भागवत में स्त्री केवल गृहस्थी का हिस्सा नहीं, बल्कि नैतिकता और संस्कृति की संरक्षिका है।

(5) शिक्षा, संवाद और गुरु–शिष्य परंपरा :

शुकदेव–परीक्षित संवाद यह दिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य विवेक, संयम और सामाजिक उत्तरदायित्व पैदा करना है। ज्ञान प्रेम, संवाद और तर्क से दिया जाता है, न कि भय या दमन से — यही भागवत की शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि है।

(6) परिवार, समुदाय और सामूहिक सहयोग की संस्कृति :

गोकुल–वृंदावन आदर्श ग्राम समाज का मॉडल है जहाँ परस्पर सहयोग, श्रम-विभाजन, सामूहिक उत्सव और संकट में एक-दूसरे की सहायता सामाजिक मूल्य के रूप में सामने आते हैं।

(7) भक्ति, मानव-प्रेम और सार्वभौमिक मानववाद :

भागवत की भक्ति केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि मनुष्य को अहंकार-मुक्त, दयालु, उदार और समाज-उपयोगी बनाती है। कृष्ण दुष्ट प्रवृत्तियों का नाश करके यह स्थापित करते हैं कि समाज में सत्य और करुणा सर्वोच्च हैं।

निष्कर्ष :

अंततः भागवत-महापुराण एक सार्वभौमिक मानववाद का संदेश देता है। यहाँ ईश्वर केवल किसी एक समुदाय, क्षेत्र या विचारधारा के नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता और सभी जीव-जंतुओं के हैं। भागवत समस्त प्राणियों को समान रूप से प्रेम और करुणा के योग्य मानता है। इसी भावना से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का वास्तविक अर्थ पूर्ण होता है। इस प्रकार भागवत महापुराण केवल मोक्ष या आध्यात्मिकता का ग्रंथ नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों- सत्य, दया, करुणा, समता, स्त्री सम्मान, शिक्षा, न्याय, कला-संस्कृति, परिवार, त्याग, तप, भक्ति और मानवता का विराट विश्वकोश है। इसके चरित्र समाज को प्रेरणा देते हैं, उसके उपदेश आचरण को नियोजित करते हैं और उसकी कथाएँ मनुष्य को संवेदनशील, संयमी, न्यायप्रिय और सहयोगी बनाती हैं। आधुनिक समय में जब समाज तनाव, भेदभाव, हिंसा और असंतुलन से जूझ रहा है, तब भागवत का संदेश और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह मनुष्य को भीतर से बदलकर समाज को बाहर से बदलने की प्रक्रिया को सरल बनाता है। यही इस महाग्रंथ का शाश्वत महत्त्व है।

सन्दर्भ सूची :

1. दूबे, डॉ हरिनारायण, पुराण समीक्षा, प्रथम संस्करण 1984, इन्टरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर डेवलेपमेंट रिसर्च, इलाहाबाद, पृ.57
2. 'अमृतलाल नागर के उपन्यास-भारतीयता की पहचान' : डॉ. बी. जे. पटेल 'ब्रिजेश', प्रथम संस्करण २०१०, चिन्तन प्रकाशन कानपुर, पृ. 430
3. श्रीमद्भागवत-महापुराण–खण्ड 01-महर्षि वेदव्यास रचित, गीताप्रेस गोरखपुर, वि. सं. 1997 पृ. 81
4. वही – खण्ड 01 पृ. 823
5. वही – खण्ड 02 पृ. 20
6. वही - खण्ड 02 पृ. 341
7. वही – खण्ड 01 पृ. 637
8. वही – खण्ड 01 पृ. 18